वाल्मीकि व्याघ्र आरक्ष, प्रमण्डल–02, बेतिया, प0 चम्पारण, बिहार।

–वाल्मीकिनगर टूरिज्म सेंटर अन्तर्गत–

जटाशंकर मंदिर

वाल्मीकि व्याघ्र आरक्ष के संघन वन क्षेत्र में अवस्थित वाल्मीकिनगर (भैंसालोटन) में गोल चौक से लगभग 2.5 कि0मी0 की दूरी पर अवस्थित यह भगवान शिव का मंदिर है। यहां श्रावण मास के पहली सोमवारी को देवाधि देव–महादेव की पूर्जा–अर्चना करने के लिए स्थानीय भक्तों के साथ–साथ सीमावर्ती नेपाल एवं उत्तर प्रदेश से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रतिदिन आते है। श्रावण मास में पवित्र नारायणी नदी के संगम तट पर स्थान कर श्रद्धालु जटाशंकर मंदिर में जलाभिषेक करते है।

कौलेश्वर मंदिर

यह मंदिर वाल्मीकिनगर (भैंसालोटन) में गोल चौक से करीब 03 कि0मी0 दूर अवस्थित है। यह भगवान शिव का मंदिर है। यहां भी श्रावण मास में श्रद्धालूओं की काफी भीड़ उमड़ती है। काहां जाता है, कि यह मंदिर पुरी पत्थर से बनी है कही भी ईट का प्रयोग नही हुआ है। इसे देखने के लिए पर्यटकों में काफी इजाफा हो रहा है।

नरदेवी मंदिर

यह मंदिर वाल्मीकिनगर गोल चौक से करीब 1.5 कि0मी0 दूर घन्ने जंगल में अवस्थित है। यह मॉ दुर्गा का मंदिर है। शारदीय नवरात्री, चैत्र नवरात्री के अलावा हर दिन श्रद्धालुओं की भीड़ लगती है। यहां बिहार, उतर प्रदेश के अलावा सीमावर्ती देश नेपाल से काफी संख्या में लोग पहुँच रहे है। इस मंदिर के प्रांगण में एक प्राचीन कुऑं भी है, जिससे लोग पानी निकालकर पुजा–अर्चना करते है।

गंडक बराज (वाल्मीकिनगर)

गंडक नदी पर निर्मित बराज का उद्घाटन 04 मई, सन् 1964 ई0 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं नेपाल के तत्कालीन महाराजा बीरेन्द्र बीर बिक्रम शाह देव द्वारा किया था। इस बराज में कुल–36 पिलर है जिसमें 18 पिलर नेपाल में पड़ता है। तथा बराज में कुल 52 फाटक के साथ इसकी लंबाई–835 मी0 है। बराज से उपर नेपाल से निकलने वाली तीन नदियां नरायणी, पचनद तथा सोनहा का संगम स्थल है जिनमें त्रिवेणी के नाम से मशहुर हे। इन नदियों नदी का पानी बराज से बहकर भारतीय क्षेत्र वाल्मीकिनगर में प्रवेश करती है जहां इसे गंडक नदी के नाम से जाना जाता है और यह आगे सोनपुर में जाकर गंगा नदी में मिलती है। यह बराज आधारभूत संरचना निर्माण का अद्भुत नमूना है जिसे देखने के लिए लोग आते है। गंडक नदी में में डाल्फिन, मगरमच्छ, घड़ियाल एवं मछली आदि जलीय जीव पाये जाते हैं।

ईको–पार्क (वाल्मीकिनगर)

यह ईको पार्क वाल्मीकिनगर गोल चौक से करीब 1.5 कि0मी0 दूर जंगल कैंप के सामने अवस्थित है। यह पार्क गंडक नदी के किनारे बनाया गया हैं। इसका उद्घाटन बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितिश कुमार द्वारा 08 नवम्बर, 2019 को किया गया। इस पार्क में बच्चों के लिए झुला, बैठने के लिए बेंच, एक वॉच टॉवर तथा विभिन्न प्रकार के फुल, पेड़–पौधे लगाये गये है।

सॉविनियर शॉप

यह सॉविनियर शॉप का निर्माण वाल्मीकि विहार रिसोर्ट के कैंपस में बनाया गया है। इसमें स्थानीय थारू जनजाति के लोगो के द्वारा बनाया गया डउरी, मोनिया, डोल ढ़कना, उन्नी का स्वेटर, शॉल, चादर, टोपी आदि हस्तकला उघोग (समान) का बिक्री की जाती है। यहां आने वाले पर्यटक इस शॉप से समान की खरीदारी करते है।

कौलेश्वर झुला

यह झुला जंगल कैंप परिसर से 0.5 कि0मी0 दूर गंडक नदी के किनारे अवस्थित हैं। इस झुला का निर्माण करीब 200 मी0 लंबाई में किया गया है। यहां पयटकों के साथ–साथ स्कूली बच्चे भी आते है।

गंडक नदी में मोटरबोट

गंडक नदी में मोटरबोट का भी संचालन किया जा रहा है। मोटरबोट से पर्यटक नेपाल का त्रिवेणी एवं गंडक बराज का दीदार करते है।

भेड़िहारी ग्रासलैण्ड वॉच टॉवर।

यह वॉच टॉवर वाल्मीकिनगर प्रक्षेत्र के भेड़िहारी ग्रासलैण्ड में बनाया गया है। यह जंगल कैंप परिसर से करीब 16 कि0मी0 की दुरी पर जंगल के बीचों–बीच अवस्थित है। यहां जंगल सफारी में आने वाले पर्यटक इस वॉच टॉवर पर चढ़कर ग्रासलैण्ड में विचरण कर रहे वन्यजीवों का दीदार करते है।

कौलेश्वर हाथी शेड

जटाशंकर मंदिर परिसर से करीब 0.5 कि0मी0 पर अवस्थित हाथी शेड का निर्माण किया गया है। इस शेड में चार हाथी कर्नाटक से मंगाये गये है। जिसका नाम मणिकंठा, द्रोर्णा, राजा व बालाजी है। ये चारों हाथी अभी यहां के स्थानीय भाषा व यहां के वातावरण को ट्रैनर के माध्यम से सीख रहे है। फिलहाल ये हाथी जंगल की सुरक्षा के लिए पेट्रौलिंग के अलावा आने वाले पर्यटको को आर्शिवाद देकर व प्रणाम कर स्वागत करते है।

	⇦ **गंडक नदी में विचरण करते प्रवासी पंक्षी** वन क्षेत्रों के पाट होकर गुजरी सोनभद्ध, तमसा, त्रिवेणी, मनोर, भपसा, रोहुआ व गंडक आदि नदी में शरद ऋतु के साथ–साथ अन्य मौसम में भी स्थानीय पंक्षियों के साथ प्रवासी पंक्षियों का जंगल सफारी में जाने वाले पर्यटक नदियों में विचरण कर रहे पंक्षियों का दीदार करते है।
	⇦ **वाल्मीकिनगर ग्रासलैण्ड** वन क्षेत्रों के अंदर शाकाहारी वन्यजीवों के लिए ग्रासलैण्ड का निर्माण किया गया हैं। इस ग्रासलैण्ड में हिरण, सांभर, कोटरा, गौर, मोर, खरगोश, आदि वन्यजीव दिखाई देते है।